Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ जय बाबा स्वामी ॥

ॐ

|| Whole World is a Family ||

20-2-2014
गुरुवार

सदगुरू वाणी (6)

सभी पुण्य आत्माओ को मेरा नमस्कार ---

श्रद्धा आध्यात्मीक प्रगती करने के पुर्व हमारा हमारे शरीर पर नियत्रंण आवश्यक होता है। कयोकी जिसका अपने शरीर पर ही नियत्रंण नही है, वह अपनी आत्मा पर नियत्रंण क्या खाक करेगा। और हम हमारे दैनीक जिवन मे स्वंतत्र रहते ही है। और हमारे उपर कोई नियत्रंण नही होता है। और हमारा हमारी आदतो पर हमारे शरीर पर नियत्रंण हो इसी लीये हम सदैव "गुरुस्थानो" का प्राय: सहारा लेते है, कयोकी हमारा गुरुस्थानो के प्रति "श्रद्धा" का भाव होता है, और इसी श्रद्धा भाव के कारण ही हम हमारे शरीर पर नियत्रंण कर पाने मे समर्थ हो जाते है, हम हमारे उपर नियत्रंण करने मे असमर्थ है, हम हमारे शरीर के "दास" है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

लेकीन जब हम गुरुस्थान रूपी आश्रमो मे जाते है, और वहा पर हम सब लोगो को आश्रम की व्यवस्था का नियमो का "आत्मीयता" से पालन करते देखते है। तो सामुहिकता के प्रभाव मे हम भी धिरे २ उन व्यवस्था और नियमो का पालन कर, अपने शरीर पर नियत्रंण पाने मे सफल हो जाते है, याने ये आश्रम ही हमारा हमारी शरीर की आदतो पर नियत्रंण करने का अन्तीम उपाय है,
प्रत्येक आश्रम के अपने कुछ नियम, होते है। आश्रम की अपनी कुछ व्यवस्था, होती है। उनका अपना पवीत्रता का "शुद्धता" का मापदंड होता है। इसलीये सदैव याद रखो की कोई नियम कोई व्यवस्था आपके माध्यम से भंग न हो। क्योकी नकारात्मक शक्तीया सदैव आपको माध्यम बना कर ही उन नियमो को उस स्थान की पवीत्रता को भंग करने का प्रयास करेगी तो आप ऐसे नकारात्मक शक्तीयो के माध्यम बनने से सदैव बचो आत्मा पर नियत्रंण के पहले शरीर पर नियत्रंण आवश्यक है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W).
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

रामायण मे "रावण" भी "सीताजी" को उठाकर ले जाने को "साधु" के वेष मे ही आया था। कही नकारात्मक शक्तीयाँ आप साधको के वेष मे तो आश्रम मे नही आ रही हैं। इस बात का ध्यान "प्रत्येक साधक" को रखना ही होगा। आपका आपके शरीर पर और शरीर की बुरी आदतो पर नियंत्रण नही है, तो आप आश्रम मे न आये तो वही अच्छा है। क्योकी कम से कम आश्रम के नियमो तोडने का "पाप" तो आप के हाथ से नही होगा।

सारा आध्यात्म केवल एक ही शब्द पर टिका है, वह शब्द है, "अधीक्षत" आप जो कार्य कर रहे है, आप "गुरुशक्तीयो" के द्वारा इस कार्य करने को अधीक्षत है, क्या यह पहला प्रश्न अपने आप से करो फिर आगे कोई भी कार्य करो। एक सामान्य सा मनुष्य हिमालय मे जाता है, वहाँ सालो से ध्यानस्थ "कैवल्य कुंभक योगीयो" के साथ रहता है, वहाँ के नियमो का पालन करता है, वहाँ के अनुशासन का पालन करता है, यह सब वह इसलीये कर पाया क्योकी उसकी गुरु के प्रती श्रद्धा थी यह मेरे "गुरु" के "नियम" है, यह मेरे "गुरु" का "अनुशासन" है, मुझे मेरे गुरु प्रिय है, तो उनका

सबकुछ प्रिय है, यह "पवीत्र" और "श्रद्धा" का भाव था, इसी कारण मेरा शरीर सबकुछ मानता चला गया। उन नियमो और अनुशासन को पहले मेरा शरीर झुका और बाद मे आत्मा झुकी थी।

अरे बाबा, गुलाब के झाड मे कांटे भी होते ही है, और यह कांटे ही गुलाब को सरंक्षण प्रदान करते है, इसलीये सदैव याद रखो कोई भी "संस्था" एक अनुशासन और नियमो पर ही आधारीत होती है। प्रथम नियम- और अनुशासन का पालन करना सिखो, और कोई एक साधक नियमो को तोड रहा है, तो उसे तोडने दो आप क्यो तोडते हो वह नियम तोड रहा है, याने उसका शरीर पर नियंत्रण नही है, ऐसे साधक पर आप आपका चित्त क्यो डाल रहे है, वह नकारात्मक शक्तीयो का "माध्यम" बन रहा है। कल नकारात्मक शक्तीया ही उसे सामुहीकता से बाहर फेकर जायेगी आप क्यो "जाने वाले" पर अपना "चित्त" रख रहे है। मुझे आप की चिंता है। उसकी नही वह तो जाने ही वाला है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

शरीर को आत्मा के अधीन करना आसान नही है। हमे प्रथम शरीर की बुरी आदते, जिबान, का स्वाद, शरीर का, "मैं" का, अंहकार, का, यह नियम मैं क्यो मानु फीर बुद्धी उसे तोडने का मार्ग, बताती है, वहाँ होने वाली का सामना करना पडता है, बाद मे बुद्धी असुवीधाओ, का शरीर आदी नही होता है, इस लीये शरीर भी विरोध करता है। और कई बार हम जिस स्तर के होते है वैसे ही स्तर के लोग हमे वहाँ भी मिल जाते है, और इसी कारण "शरीर" का भाव और भी बढ जाता है, और यह सब तब बढ जाता है, जब हमारे भितर "आत्मभाव" की कमी हो। इसी लीये, जब तक हमारे भितर "श्रद्धा" और "भाव" जाग्रत न हो आप ऐसे "गुरुस्थानो" पर जाये ही नही। अपने घर से ही नमस्कार कर ले। इससे थोडा सा क्यो न हो "आत्मभाव" तो जगेगा, और आप भी वहाँ जाकर नकारात्मक शक्तीयो का माध्यम बनने से बचेंगे। और यह अधीक महत्वपूर्ण है। क्योकी नियम और अनुशासन तोडने वाले साधक ध्यानमार्ग से बाहर हो जाते है, कभी न आने के लिये यह मेरा निजी अनुभव है क्योकी सामुहिकता ही उन्हे बाहर कर देती है

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

आओ चले अब हमारी "संस्था" को समझे, पिछले ८०० वर्षे से हिमालय मे एक "ध्यान साधना" की पद्धती थी जो एक अनुभुती पर आधारीत थी। कहते है। की बीना आध्यात्मीक अनुभुती के आध्यात्मीक प्रगती नही हो सकती है। और अनुभुती आयी तो जिवन्त माध्यम भी गुरुशक्तीयो के द्वारा "अधीकृत" कर के भेजा गया और इस प्रकार से हमारे समाज मे इस ध्यान पद्धती की शुरवात हुयी।

इसने "गुरुजगत" "माध्यम" के लिये भी यह सारा जगत नया था। और साधक जगत भी छोटा देखा था। लेकीन यह "साधक" जगत था। जो भी पंचलोग सा था। आज से पंधरा साल पहले की बात है, जो भी पंचलोग सामने आकर बैठ गये उन्हे ही लेकर "ट्रस्ट" की "स्थापना" की गयी थी और ट्रस्ट का प्रारंभ हो गया। और धिरे २ कार्य का वीस्तार होता गया पहले तो शिबीरो तक ही कार्य सिमटा हुआ था। बाद मे एक सेन्टर पहला ब्रुडु मे खुला और बाद मे सेन्टर भी खुलते चले गये। फिर "कार्यालय" खुला बडे कार्यक्रम होने लग गये। हर तीन साल के बाद नये नये ट्रस्टी आते गये, कोई समय दे पाये, कोई नही, कोई जवाबदारी नही थी, कोई कार्य कर पाये, कोई नही, कोई कार्य सौंपा गया नही था सब स्वेच्छीक था करना है तो करो नही तो मत करो। "वन मेन" आर्मी वाली स्थीती थी। एक ही "माध्यम" कार्यक्रम भी दे, अनुभुती भी करवाये, व्यवस्था भी देखे, अपनी "आध्यात्मीक साधना" भी करे। इन सभी बातो के बीच भी "माध्यम" ने अपनी आध्यात्मीक स्थिती बनाये रखी। क्योकी वह जानता था की

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

वह स्थिती अगर रही तो यह आसपास की परिस्थीती भी एक दिन अवश्य सुधरेगी इसलीये माध्यम ने सदैव अपनी "साधना" पर ही अधीक समय लगाया। और इसी लीये हमारी "संस्था" की "आध्यात्मीक" प्रगती हुयी क्योकी यह सौभ "माध्यम" ने स्वंयम ही संभाला था।

बाद मे एक "आश्रम" बना। और कई वर्ष तक एक ही आश्रम था, बाद मे और कुछ आश्रम बने, वे बने साधको की सामुहीक शक्ती के कारण, लेकीन सभी ट्रस्टी मीलकर एक साथ कार्य कर रहे ऐसा कभी भी नही हुआ कुछ कार्य करते ही नही थे घर पर ही बैठते थे तो जो कार्य करते थे उन्ही के उपर सारा कार्य आ जाता था, और इसी अत्याधीक कार्य के भार से जो कार्य करते थे। वे भी व्यवस्थीत कार्य नही कर पाते थे, वे भी सभी कार्यो मे निपुन नही थे लेकीन उसमे उनका दोष नही था एक ही व्यकती सभी बातो मे "विशेषज्ञ" हो यह आवश्यक नही है, इसी लीये जमीनो के "अधीग्रहण" मे इतना अधीक समय लग गया। दुसरा प्रत्येक ट्रस्टीयो की प्रथम मिटींग मे "माध्यम" उन्हे बताता था मेरा कोई "लक्ष्य" नही है। मेरी कोई "योजना" नही है, आप केवल "प्रेम" से सामुहीकता मे रहो गुरुशक्तीया सब कार्य कर लेगी। लेकीन केवल प्रेम से आत्मीयता से रहना भी उनसे कभी नही हुआ वे अपने अपने "मै" के अंहकार को लेकर लडते ही रहे।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

माध्यम की स्थिती "माँ" की थी कीसका पक्ष ले सब
ही मेरे बच्चे है, और यही की, यही स्थिती आजतक बनी
हुई है। और ऐसे स्थिती मे भी कार्य का इतना विस्तार
हुआ, साधको की संख्या, लाखो मे हो गयी है, और यह
आठवी मंगलमुर्ती का प्राणप्रतीष्ठा समारोह चल रहा है,
अब यह सारा सीस्टम १५ साल पुराना है, और पीछले
१० सालो मे दुनीया ही बदल गयी है, इसीलीये आवश्यक
है, की सारी व्यवस्था ही युवा पिढी के हाथो सोंप दी जाये
और इसी लीये इसकी शुरुवात मैंने मेरे घर से ही की है,
अब तक नयी व्यवस्था लागु होगी। बेचन
जब से बच्चो ने कार्य संभाला तो जब उन्होने प्रथम बार
बताया तब मैंने जाना की हमारे सालभर छोटे २ कई निशुल्क,
कार्यक्रम, होते है, और इसी कारण खुब खर्च होता है, वह
और जो आश्रमो को चलाने का जो मासीक खर्च है, वह
भी अधीक है, और कोई निश्चीत आमदानी नही है, इसीलीये
कोई भी "योजना" नही बनायी जा सकती, तो मैंने उन्हे
सलाह दी, की आश्रमो की आय बढाना अपने हाथ मे
नही है, आप पहले अपने खर्चे ही कम कर दो,
यह खर्च कम करना तो अपने हाथ मे है, दस साल
से यह बात मे ट्रस्टीयो को बता रहा हुं, तो उन्होने
150 रु रोज पर जो कर्मचारी लगा रखे थे वे प्रथम.

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

हटाये, साधको और सेवाधारीयो मे कार्य बांट दिया। इस बार कुटीर के बाहर लायटींग कर के रखते थे। बच्चे बोले रात को तो, आप बाहर नहीं आते वह नही लगाओ, तो चलेगा मैंने कहा। हाँ, मुझे कुछ आवश्यकता नही है, तो इस बार वह भी बंद कर दी। याने खर्चे कम करो पर जोर दिया जा रहा है। दशबंन्धा धारी योजना खर्च कम करके ही हम अपनी आय को निर्माण कार्य मे लगा सकेंगे आश्रमो के निर्माण के समय मेरा प्रयत्न था की हम अगली पिढ़ी निर्माण भवन न छोड़कर जाये, लेकीन जमीन छोड़कर जाये क्योंकी निर्माणकार्य तो मेरे बाद खुब होने ही वाला है, लेकीन निर्माणकार्य के लिये जमीन आवश्यक है, अब जमीन अधीग्रहण का कार्य समाप्त हो चुका है। अब शिघ्र ही "श्री गुरुशक्तीधाम" का निर्माण कार्य प्रारंभ होने वाले है, और अन्य भी निर्माण कार्य प्रारंभ हो रहे है, और इसके लिये निरंन्तर "धन" की आवश्यकता होगी यह सब बातो को ध्यान मे रख कर "सौराष्ट्र" के साधक साधीकाओने एक योजना सामने रखी है। जिस योजना से प्रतिवर्ष एक निश्चीत धन राशी जमा हो सकेगी और उस धन राशी की निश्चीतता से सालभर मे क्या क्या कार्य सफल हो सकते है, वह भी निश्चीत हो सकता है। वह "योजना" इस प्रकार से है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

इस योजना का नाम है, "दशबंदधारी योजना" यह योजना मे महत्वपुर्ण भाव यह है, की पृथ्वी गोल है, आप जो भी दोगे वही कई गुना होकर आपको वापस प्राप्त होता है,। इस लिये आप दुसरे को "मोक्ष" दो ताकी आपको आपके जिवनकाल मे "मोक्ष" प्राप्त हो सके। मेरा अपना निजी अनुभव है, की "मोक्ष" ध्यान की वह अवस्था है, जो आप दुसरो को यह स्थिती बांटकर ही प्राप्त कर सकते है, अब प्रश्न आता है, यह मोक्ष की स्थिती साधक औरो को बाटेगे कैसे, उसका उत्तर है, "मोक्षधाम" बना के अब जो भी गुरुशक्तीधाम बनने जा रहे है, वे अगले ८०० सालो तक मोक्ष पाने की इच्छा रखने वाली आत्माओ के लिये "मोक्षधाम" ही सिद्ध होगे मोक्ष प्राप्ती के लीये आवश्यक होता है, आत्मा का साक्षात्कार अब यह "आत्म साक्षात्कार" का कार्य अब मंगलमुर्तीयो के माध्यम से होगा क्योकी मंगलमुर्तीया जिवन्त "संकल्प" के द्वारा तैयार की गयी है, इन मंगलमुर्तीयो की प्राण प्रतीष्ठा करते समय यह संकल्प कीया गया है, अगले ८०० सालो तक "आत्मअनुभुती" कराने का पवीत्र कार्य वह करेगी, यह भी गुरुशक्तीयो की प्रगती ही है, "जिवन्त माध्यम" ने भी उन्हे जिवन्त कर के अपने जिवन का उद्देश पुर्ण कर लीया है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

इस योजना मे शामील हो कर साधक या साधीका अपनी संपुर्ण आमदानी गुरुकार्य हेतु श्री गुरुचरण मे समर्पीत कर देगी और समर्पीत आमदानी मे से ९०% हीस्सा "प्रसाद" के रूप मे स्वंयम ग्रहण कर के अपना "जिवन निर्वाह" करेगा और अपनी आमदानी का १०% हिस्सा प्रत्येक वर्ष गुरुकार्य मे लगायेगा। और इस योजना मे शामील साधक या साधीका, "देशबंदधारी" कहलायेगे।

यह "देशबंदधारी योजना" १ अप्रील २०१५ से प्रांरभ की जा रही है। आप चाहे तो इस योजना मे शामील हो कर श्री गुरुशक्तीधाम के निर्माण कार्य मे अपना योगदान दे सकते है। इससे "ट्रस्ट" को एक निश्चीत धनराशी श्री प्रकार भवीष्य के वर्षो मे किस प्रकार से निर्माण कार्य निश्चीत हो यह भी योजना बन जायेगी। और इतने पवीत्र उद्देश से हो रहे निर्माण कार्य मे सहभागी होने का आपको भी आपके जिवन मे अवसर प्राप्त हो पायेगा। और इस योजना से प्राप्त धनराशी निर्माण कार्य मे ही लगेगी इस बात का मै स्वंयम ही ध्यान रखुगाँ। यह आश्वासन देता हुं।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

"मैं" का अंहकार

जब जागो तब ही सबेरा वाली बात है। अब जो भी दान करोगे वह "मैं" का अंहकार त्याग करके करो। अपनी आत्मा के समाधान के लिये करो अपनी आत्मा को सशक्त करने के लिये करो अपनी "आध्यात्मीक प्रगती" करने के लिये करो क्योंकी इस दान से आपकी आत्मा को "पुर्ण समाधान" प्राप्त होने वाला है। क्योंकी आपका दान ऐसे पवीत्र स्थान के निर्माण कार्य मे लग रहा है, जिस स्थान से भवीष्य मे लाखो आत्मारे आत्म अनुभुती प्राप्त करेगी। आत्मज्ञान से बडा इस जगत मे अन्य कोई दान नही है। कीसी को भोजन कराने से मनुष्य के शरिर को शांन्ती मिलती है, "आत्मज्ञान" का भोजन कराने से मनुष्य के "आत्मा को शांन्ती" मिलती है। शायद गुरुशक्तीयो की ही इच्छा होगी की प्रथम आप "मैं" के अंहकार से मुक्त हो जाये बाद मे ही एक पवीत्र और शुद्ध आत्माओ के सहयोग से ही श्री गुरुशक्ती धामो के निर्माण का कार्य प्रांरभ हो। हम प्रथम दांडी आश्रम, और कच्छ आश्रम, मे कार्य का प्रांरभ करेगे क्योकी इन दो जगह का N.A. का "कार्य" सफल हो गया है।

अभी की "ट्रस्ट" की व्यवस्था भी पर्याप्त नही है। ट्रस्टी अभी भी पुर्ण "समय" नही दे पा रहे है। और न उनमे "आत्मीयता" है। इसलीये ट्रस्ट के "पुर्नगठन" की आवश्यकता है।
आज के समय मे काम्पुटर्स का बडा महत्त्व है। समुची ऑफीस की व्यवस्था काम्पुटर्स युक्त करने की आवश्यकता है। सारे सेन्टर भी संदेशो के लिये "काम्पुटर्स" का उपयोग करे। समय के साथ चलना ही होगा।

एकान्त कुटीर

इन आठ मंगलमुर्तीयो के संकल्प के साथ ही "समर्पणध्यान" का बडा कालखंड पुर्ण हुआ है। इस कालखंड मे मुझे जोजो अच्छा अनुभव आया, वह सब मैने आपको बांटा है। मुझे जिवन मे जो भी अच्छा प्राप्त हुआ सब आप को भी प्राप्त हो यही इच्छा सदैव मैने की है। इस बार इस गहनध्यान अनुष्ठान मे जैसा "एकान्त" मुझे प्राप्त हुआ। ऐसा एकान्त अगले गहनध्यान अनुष्ठान मे आपको भी प्राप्त हो। ऐसी इच्छा है। पहला अनुभव यह है। आध्यात्मीक शांन्ती के लिये शरीर को शांन्त एकान्त वातावरण मीले यह आवश्यक है, एक तो हमारी "जिबान" को आराम मिलता है, जो सामने आया वही खाना पडता है। तो ऐसा 45 दिन करोगे तो जिबान का चटोरापन समाप्त हो जायेगा दुसरा 45 "मौन" ही रहे तो इन 45 दिनो हमारी कितनी ही

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

"ऊर्जाशक्ती" जो बोलने मे खर्च होती है, वह बच जायेगी उस ऊर्जाशक्ती को आपने अपनी आध्यात्मीक प्रगती के लिये उपयोग किया, तो आपकी आध्यात्मीक प्रगती हो पायेगी-। जिस प्रकार से माली पौधे लगाते समय दो पौधो के बीच अंतर रखता है। ताकी दोनो पौधे अच्छे से वृध्दीगत हो सके।

ठिक इसी प्रकार मनुष्य की आध्यात्मीक प्रगती के लिये आवश्यक है। प्रत्येक मनुष्य कुछ समय अपने जिवन का "एकान्त" मे बीताये अपने आत्मा के साथ बीताये इससे आपके आत्मा के साथ आपका संम्बन्ध मजबुत होगा"। इस बार मुझे लगा की जब हम सोते है, तब हमारा आभामंडल अधीक संवेदनशील हो जाता है, और तब अगर आप एकांत मे हो इसकी ऊर्जा ग्रहण करने की क्षमता कई गुना बढ जाती है, लेकीन आपके आसपास अन्य कोई भी मनुष्य न हो यही कारण होगा की कुछ मुनी जंगल मे जाकर "निर्जन" स्थान को खोजते थे और वहा रहते थे। और अपनी आध्यात्मीक प्रगती करते थे। हिमालय जैसे पवीत्र और निर्जन स्थान से इस भिडभाड वाले समाज मे आकर अपनी आध्यात्मीक स्थिती को बचाये रखने के लिये मुझे यह

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

गहन ध्यान अनुष्ठानो के 45 दिनो की अवधी का बहुत लाभ हुआ है। यही लाभ कुछ "एकान्त कुटीर" का निर्माण कर आपको भी प्राप्त हो यह इच्छा है। ऐसे "एकान्त कुटीर" प्रत्येक आश्रमो मे बनाये जाये और जो भी साधक इसमे रहना चाहे रहे अगर ऐसा हुआ तो इन 45 दिनो मे आप जानोगे की, की, आप आत्मा है। आप जब अपने आप को जान लोगे तो आप मुझे भी जान जाओगे अपने आप को जानना प्रथम आवश्यक होता है।

मैंने कल्पना की है, एक ऐसे "कुटीर" की जिसमे 45 दिन आप अकेले रह रहे है। आसपास गार्डन है। घुमने को बगीया है। दरवाजे के पास एक पेटी है। उसमे दो समय आपको भोजन मील रहा है, आपके पास फोन आदी कुछ भी नही है। सारी दुनीया से आप एकदम कटे हुये है, आप है और आपकी आत्मा है, बस आपके गार्डन के बाहर 12 फीट के पर्दे टंगे हुये है। न आप कीसी को देख सकते है। और न कोई आपको देख सकता है आपके पास समय ही समय है, आपके ही विचार है, बस अन्य वातावरणसे कीसीके भी विचार आप तक नही आ रहे है, कोई आवाजे भी नही आ रही है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

आप 45 दिन से बीना "मौन" का स्कार्प बांधे भी मौन
है। कुछ दिन रहने के बाद आपको लगेगा की आप अपने
ही भितर जाने लगोगे और आपको लगेगा मैंने व्यर्थ
ही जिवन गंवाया जानने के लिये तो भीतर ही बहुत
कुछ है। कुछ दिनो के बाद आपको अनुभव आयेगा की
आपकी आत्मा से नीकटका और कोई भी नही है, हमारे भितर
ही एक जगत है। हमारे भितर ही ज्ञान का भंडार भरा पडा है।
सब ज्ञान तो हमारे ही भितर होता "मै कौन हु" यह जानना
ही सबसे बडा ज्ञान है। वह एक बार जान लीया तो बाकी
सब ज्ञान हमे वही से ही होना प्रारंभ हो जाता है।
हम अपने आप को छोडकर सारी दुनीया को जानने
की कोशीश करते है। और जिसे हम जानना कहते है।
वास्तव मे वह केवल उस विषय की जानकारी ही होती
है। याने जिसे हम "ज्ञान" समझते है। वह तो केवल जानकारी
ही है। और जानकारी सदैव "भुतकाल" की होती है।
यही तो हमारे आध्यात्मीक खोज मे हो रहा है। हम
जिसे "आध्यात्मीक ज्ञान" कहते है। वह सब पुस्तको
से प्राप्त जानकारी से अधीक कुछ नही है। और
जानकारी सदैव "भुतकाल" की होती है। जानकारी
मे उनके अनुभव है। उनकी अनुभुतीया है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

वह उनके समय की है। वह संन्देश वह उपदेश उस समय के है, जब की बुद्धी तो पिछले दस साल मे अत्याधीक ही विकसीत हो गयी है, तो हजारो साल मे बुद्धी कीतनी विकसीत हो गयी होगी। तो हजारो साल पुरानी जानकारी से "आध्यात्मीक प्रगती" कैसे होगी।

एक लायब्ररी मे कार्य करने वाला कर्मचारी रोज हजारो पुस्तके जो लोग निचे रखते है, वह उठाकर ढोता है, और अलमारीयो मे रख देता है। तो केवल ढोने से वह "विद्वान" हो जायेगा क्या ? विद्वान होने के लीये उन पुस्तको को पढना होगा, ठिक वैसा ही हम केवल पुस्तको की जानकारी ही जिवन भर ढोते रहे तो ज्ञान कब प्राप्त करेगे क्योकी पुस्तको से केवल और केवल जानकारी ही मिलेगी "ज्ञान" नही और यह जानकारी आपके अंन्तीम क्षण तक रहेगी नही आप बुढे हो जाओगे तो यह सब जानकारी भी भुल जाओगे, क्योकी यह जानकारी ही सत्य नही है, शाश्वत नही है, मै मेरे निजी ही अनुभव बताता हु, मै कईबार साधु संतो को मिलता हु, जो अपने क्षेत्र के बडे² विद्वान है, जो घंन्टो अपने विषयो पर "प्रवचन" करते है, जब मै उन्हे कहता हु। मै एक अनपढ गंवार हु।

मुझसे पुस्तको की बाते छोडकर बात करो तो वे चुप ही हो जाते है, क्यो? क्योकी उनके पास सारी जानकारी ही है, "ज्ञान" नही ज्ञान वर्तमान का होता है, आज की परिस्थीती के अनुकुल होता है।

"ज्ञान" शाश्वत होता है, इसे आप कभी भुल ही नही सकते आपका प्राप्त ज्ञान आपके अंन्तीम- सांस तक बना रहेगा इस ज्ञान की विस्मृती नही हो सकती है, क्योकी यह आपका अपना है, आपने पाया हुआ है, यह बाहर से ली हुयी जानकारी नही है, और इस ज्ञान के ओज मे कोई किसी का गुरु नही है, और न कोई किसी का शिष्य है। गुरु हो या शिष्य दोनो मे ही वही ज्ञान समान रुप से बहता है, अंन्तर है, "अज्ञान" का अंन्तर है, देहभाव का "शरीर भाव" का गुरु मे शरीर भाव नही है। शिष्य मे शरीरभाव विद्यमान है, यह शरीर भाव ही "अज्ञान" है, की मै एक शरीर हु, अब "मै" आपको दुसरे उदाहरण से समझाता हु एक सफेद "उवेन" वस्त्र है, एकदम सफेद है, शुभ्र है, उस पर कोई दाग नही है, तो उस सफेद रंग की "पवीत्रता =" उस वस्त्र से बहेगी ही।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

बाकी भी सफेद वस्त्र है। लेकीन मैले है, कुछ छोटे २ दाग भी है। और इन मैलेपन के कारण इन दागो के कारण ये सफेद वस्त्र सफेद होकर भी सफेद नही लगते शुभ्र नही लगते है।

तो "सफेद वस्त्रो" मे कोई अंतर नही सारे सफेद वस्त्र एक ही जैसे है। लेकीन वह पहले वाला वस्त्र दाग विहीन है। मैला नही है। इस लीये अलग ही लगता है, लेकीन वास्तव मे वह अलग नही है। भेद नही है, क्योकी वह भी समान है अंतर है। पवित्रता का, शुभ्रता का, अगर मैले सफेद वस्त्रो का चित्त सदैव शुभ्र सफेद वस्त्र पर हो तो उन्हे भी प्रेरणा मिलेगी वे भी इच्छा करेंगे की काश मै भी इस वस्त्र के समान शुभ्र हो जाऊ और एक दिन वे सारे गंदे मैले वस्त्र भी इस पवित्र शुभ्रवस्त्र के समान हो जायेंगे तब वह पहला वाला शुभ्रवस्त्र अलग नही लगेगा सब एक जैसे हो जायेंगे तो कोई गुरु और कोई शिष्य नही होगा। सब परमात्मामय हो जायेंगे सभी मे से परमात्मा बहेगा। क्योकी जिस प्रकार से "सफेद शुभ्र वस्त्र" की पवित्रता समान होती है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

ठिक इसी प्रकार "परमात्मा चैतन्य" समान है, एक जैसा है,
न चैतन्य, गुरु है. न "चैतन्य" शिष्य, है. "चैतन्य" तो केवल
"चैतन्य" है। शाश्वत सत्य

"चैतन्य" ही परमात्मा है। और परमात्मा सदैव समान होता है,
वही परमात्मा केवल शाश्वत है. बाकी सब बेकार की
बाते है। वही एक "सत्य" है, और वह सत्य प्रत्येक के
भितर है, और उसी को जानना ही "ज्ञान" होता है।
सब आत्मा ही हीरे है, लेकीन किचड मे पडे रहने के
कारण उनकी चमक दिख नही रही है, उस देहभाव
के "मैं" के अंहकार का किचड हटा लो तो आत्मा
हिरे जैसी चमक उठेगी। सभी आत्माऐ हीरे है, अन्दर
तो केवल "किचड" का है, आसपास के वातावरण का
है, आप एक हिरा हो यह समझ लो तो भी अज्ञानता
का "किचड" दुर हो जायेगा। अब यह समझलो की
हम सब सफेद शुभ्र वस्त्र ही है। लेकीन सफेद शुभ्रता
की अपनी अपनी अलग परिभाषा है, प्रत्येक अपने को
पाक और पवीत्र समझता है, और इसी लीये ही
पवीत्रता क्या है, पाक स्थीती क्या है। इस मापदंड
को जानने के लीये मेरे गुरुओ ने एक वस्त्र को

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

सालो अपने पास रख खुब धोया। और बाद मे आपके पास "माध्यम" के रुप मे भेजा ताकी आप जान सके की सफेद वस्त्र की पवीत्रता क्या होती है, सफेद वस्त्र कितना सफेद होना चाहीये।

अब यह कार्य करके हिमालय के गुरुओ ने अपना कार्य कर लिया। अब सफेद कपडे और शुभ्रता का मापदंड क्या है, वह आप भी जान गये कीतना स्वच्छ करना है वह भी आप जान गये है, तो आप मे और मेरे मे क्या अंतर है, सफेदवस्त्र आप भी है और मै भी हुँ। सफेद वस्त्र की पवीत्रता तो हम सब मे एक जैसी ही है। अंतर है, सफेदवस्त्र पर लगे दागो का वह दाग जिस दिन आप दुर कर लोगे हम सब मे वही पवीत्रता बनेगी जिसे परमात्मा कहते है, अब इस सफेद शुभ्र वस्त्र को देखने से आपके वस्त्र शुभ्र या पवीत्र नही हो जायेगे आपको इस वस्त्र के भितर झांकना होगा। यह सफेद वस्त्ररुपी माध्यम देखने और सुनने की वस्तु नही यह एक "माध्यम" है. इसके पिछे जो "पवीत्र शुभ्र वस्त्रवाली आत्मा" है. उसे अनुभव करना होगा।

माध्यम के पिछे की "पवीत्र आत्मा" को अनुभव करना है। तो प्रथम उस "पवीत्र आत्मा के झोन" को समझना होगा उस विशाल झोन के माध्यम से ही उस तक पहुचा जा सकता है। "झोन" से मेरा आशय उस विशाल झोन से है। जिससे वह "पवीत्र आत्मा" जुडी हुयी है।

प्रथम तो यह समझो यह वह "पवीत्र आत्मा" है। जिससे लाखो आत्माऐ जुडी हुयी है। और यह "पवीत्र आत्मा" लाखो आत्माओ से जुडी हुयी है। याने प्रत्येक साधक की आत्मा उसके "क्षेत्र" के अंन्तरगत आती है। हमारे प्रत्येक साधक के साथ "आत्मीय संमन्ध" होने चाहीये। क्योकी हम उस "माध्यम" तक पहुचना चाहते है। गुरु झोन के अधीन गुरु के ट्रस्ट आते है। उन "ट्रस्टो" के साथ उनके सेवाधारीयो के साथ उनके ट्रस्टीयो के साथ आपका व्यवहार आत्मीयता भरा होना चाहीये आपको उनके प्रती अपनापन लगना चाहीये। जब आप ट्रस्ट द्वारा आयोजीत कार्यक्रमो मे जाते हो तब आपके कारण वहाँ की व्यवस्था मे कोई परेशानीनहो ऐसा आपका व्यवहार होना चाहीये सभी नियमो का, सभी व्यवस्था का आपने सम्मान करना चाहीये, आपसे कोई अनुशासनहिनता नही होनी चाहीये

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

आप जब आश्रमो मे जाते हो तब आप तीन दिन पुर्व सुचना देकर जाना चाहिये। इससे आपकी रहेना करने की क्षमता बढ़ जायेगी।

आश्रम की पवीत्रता का स्वच्छता का, व्यवस्था का नियमो का आपने अपनेपन से पालन करना है। आप जब भी आश्रम जाये आप वहाँ कोई न कोई सेवा देकर आये। इससे आपको एक ओर गुरुकार्य करने लाभ मिलेगा। दुसरी ओर सभी लोग सेवा देगें तो आश्रम अधीक पवीत्र स्वच्छ रह सकेगा। आप को कुछ लगता है, तो केवल सुझाव मत दो आप क्या कर सकते हो वह देखो और वह करने की तैयारी बताओ आप के अपने घर मे गंदगी हो तो आप घर मे सुझाव देते हो क्या नही, उस गंदगी को दुर करने लग जाते हो ठिक वैसा ही यह आपका "ट्रस्ट" है, यह आपका अपनी "आश्रम" है, यह अपनेपन की भावना आप जितनी वृद्धीगत करोगे आप उतने ही गुरुशक्तीयो के करीब जाओगे। आप जब भी आश्रम आओ तो आश्रम से मुझे क्या मिलेगा, क्या सुवीधाऐ मिलेगी यह न सोचने हुये।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W).
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

आप यह देखो यहाँ क्या क्या और किया आसकता है, कैसे अन्य साधको को "सुविधाऐं" मिल सकती है, यह जो निर्माण कार्य प्रारंभ हो रहा है, उसमे मै स्वयम क्या क्या योगदान दे सकता हु। मेरी ओर से कितने "पत्थर" ही। गुरुशक्तीधाम मे लग सकते है।

ही। गुरुशक्तीधाम तो भवीष्य मे आध्यात्मीक अनुभुती का विश्वविधालय होने वाला है।आने वाले ८०० सालो तक लाखो आत्माऐ आकर इस विश्वविधालय से अनुभुती के द्वारा आत्मज्ञान की शिक्षा ग्रहण करने वाली है, भवीष्य मे इन विश्वविधालयो के लीये जगह कम पडने वाली है क्या मैं इस कार्य मे कोई सहायता कर सकता हु, यहाँ की "गौशाला" मे हमारे देश की सर्वश्रेष्ठ गाय की किस्म और नस्ल रखने का कार्य हो रहा है. क्या इसमे क्या योगदान कर सकता हु, यहा अभी कितना ही वृक्षारोपण किया जा सकता है, यहाँ पर पानी, की प्रकाश, की व्यवस्था, और अच्छी कैसे हो सकती है, साधको के ही बच्चो के लिये एक "विश्वविधालय" का निर्माण किया जा सकता है, जहाँ पर शिक्षा के साथ ध्यान और "आध्यात्मीक ज्ञान" की भी व्यवस्था की जा सकती है

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

आप जब भी आश्रम आओ तो ऐसा बड़ा सोचो। इससे आपकी भी प्रगती होगी और "गुरुक्षेत्र" की भी प्रगती होगी, यह सभी "माध्यम" की योजनाऐ हैं। आप को- इन योजनाओ मे चित्त से "शामील" होना है, ताकी- आप उस "गुरुक्षेत्र" के भितर प्रवेश कर सको जहाँ आप प्रवेश करना चाहते हो। "गुरुक्षेत्र" के कण कण मे गुरुशक्तीयां वास करती है, और इसका अनुभव ऐसा करने से "पल पल" मे प्राप्त होगा।

गुरुक्षेत्र वह पवीत्र स्थान है, जहाँ हम ऐसी ही सकारात्मक बातो पर अपना चित्त रखेंगे तो चित्त पवीत्र और शुद्ध होगा और जितना अधीक हमारा वस्त्र होगा उतना ही शुभ्रता का पवीत्रता का हमारा "आत्माराम" होगा आप सभी को यह संदेश रुप "सकारात्मक उर्जा" प्रदान करे और आपके जिवन मे एक सकारात्मक बदलाव इस "अष्टम अनुष्ठान" से आये यही प्रभु से प्रार्थना है, आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद

आपका
बापजी
20/2/2014